Review Of Research
Vol.1,Issue.10 , July; 12pp.1-4
ISSN:-2249-894X

Available online at www.reviewofresearch.net

ORIGINAL ARTICLE

चरित्र निर्माण और आनंद प्राप्ति का माध्यम संगीत कला ग्रीक साहित्यीक अरस्तू के सांगीतिक विचार

सुनिल बा. पटके

संगीत विभाग, कला महाविद्यालय,अकोला (मलकापूर)
e-mail :patake.sunil@gmail.com

प्रस्तावना :

अरस्तु (इ.पू.384–322) प्राचीन ग्रीक साहित्य का अंतिम प्रमुख दार्शनिक है । अरस्तु ने अपने पूर्वाचार्यों से ही दिशा प्राप्त की, पर उसकी शैली वैज्ञानिक है । वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर किया गया अरस्तू के काव्य–शास्त्र का विवेचन एवं नियमित व्यवस्थित है । अरस्तु की विवेचन–पध्दति स्पष्ट एवं तर्कसंगत है और वह सामान्य विवके के मार्ग से कभी विचलीत नहीं होती.

अरस्तु के विचार एक दूसरे से संबंधित है तथा उसका एक विशेष प्रबंध (treatise) 'पौइतिक्स' कला को ही समर्पित है । अरस्तु के विचार से कला नैतिकता से भिन्न है क्यों कि नैतिकता किया से सीधा संबंध रखती है जबकी कला निर्माण से संबंधीत है ।

कला एक बौध्दिक सद्‌गुण :

अरस्तु प्रत्यय को आत्मा मानता है और आत्मा ही पदार्थ के जन्म और विकास के लिए उत्तरदायी है । कला एक बौद्धिक सद्‌गुण है, बुद्धिद्वारा निर्देशित यह एक रचनात्मक प्रकिया है अरस्तु कहते है कि यदि कोई बिना बुद्धि की सहायता के, केवल इंद्रियों से प्रेरित होकर ही कला की रचना करता है तो वह कलाकार है ही नहीं । इसका एक और अर्थ है कि वह आत्मा से भी प्रेरित नाहीं है, क्योंकी प्रेरित होने पर ही वह बुद्धि का प्रयोग अपनी कला में कर सकता हैं ।

कला का चरित्र पर प्रभाव :

हमारे चरित्र कला से अत्यधिक प्रभावित होते है, विशेषकर संगीत की कला से । अगर हम भक्तिपूर्ण संगीत सुनते हैं तो हमारा ह्रदय द्रवित हो जाता हैं । जब हम करूणपूर्ण रचनाएं सुनते हैं तो हमारा ह्रदय द्रवित हो जाता हैं । चूँकि संगीत हमें आनंद की भावना से भर देता हैं तथा सद्‌गुण भी हमें आनंद देते हैं, इसलिए हमें ऐसे ही संगीत को सुनना चाहिए जो सद्‌गुण से पूर्ण हो तथा सुंदर चरित्र के हों । संगीत का प्रभाव हम अपनी आत्मा में अनुभव करते हैं ।

अरस्तू के अनुसार बॉसूरी चरित्र की उतनी अभिव्यक्ति नहीं करती जितनी अनुराग की । मनुष्य स्वर और लय से इतना अधिक प्रभावित क्यों होता हैं जितना रंगों या ग्रंथो से नहीं ?इसका यही कारण हे कि मनुष्य कियाशील एवं गतिशील प्राणि है तथा संगीत में भी गती एवं किया होती है जबकि अन्य में यह विशेषता नहीं होती । इसलिए मनुष्य संगीत में अत्याधिक आनंद लेता है । बच्चे बहुत जल्द ही इस प्रकार के स्वरों से आनंद प्राप्त करना प्रारंभ कर देते हैं ।

अरस्तू के अनुसार संगीत सीखने की आवश्यकता :

संगीत के विषय में चर्चा करते हुए अरस्तु कहते है कि किशोरों को शिक्षा मनोरंजन के उद्‌देश्य से नहीं दी जानी चाहिए क्योंकि शिक्षा में आनंद ही नही है वरन् उसमें कष्ट भी है । न ही बौद्धिक आनंद उस आयु के बच्चों के लिए उपर्युक्त ही है क्योंकि वह उनका लक्ष्य होना चाहिए और जो स्वयं पूर्ण नहीं है वह लक्ष्य प्राप्ति को पूर्ण नहीं कर सकता । यह कहा जा सकता है कि बच्चे इसलिए संगीत सीखते हैं कि बडे होकर वे उसका आनंद प्राप्त कर सकें । अगर ऐसा है, अरस्तू आगे कहते है, तो उन्हें स्वयं सीखने की क्या आवश्यकता है तथा वे दुसरे से संगीत सुनकर भी

Please cite this Article as : ***सुनिल बा. पटके , चरित्र निर्माण और आनंद प्राप्ति का माध्यम संगीत कला ग्रीक साहित्यीक अरस्तू के सांगीतिक विचार*** **: Review Of Research (July; 2012)**

आनंद प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि यह तो निश्चित ही है की जो संगीत को अपने जीवन का व्यवसाय या धंदा बनाए हुए है, वे उसे अच्छी तरह से प्रस्तुत कर सकते हैं, बजाए उनके जो केवल उसे जानने के लिए सीख रहे हैं । यदि यह कहा जाए कि संगीत हमारे चरित्र का निर्माण करता है तो भी यह कहा जा सकता है कि इससे हमें संगीत सीखने की क्या आवश्यकता है । हम दुसरे के संगीत को सुनकर भी सच्चा आनंद प्राप्त कर सकते हैं तथा सही निर्णय ले सकते हैं ।

अरस्तू के अनुसार संगीत से आनंद की प्राप्ति :

अरस्तु का प्रथम प्रश्न है की संगीत शिक्षा का अंग है अथवा नहीं । शिक्षा, मनोरंजन, या बौद्धिक आनंद इन तीनों में संगीत किसका अंग है ? देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि संगीत तीनों का अंग है । थकान के बाद विश्राम करने के लिए हमे मनोरंजन चाहिए तथा विश्राम मधुर होता है क्योंकि वह कष्ट को मिटाने की कला होती है । बौद्धिक आनंद भी आनंददायक होता है । इसलिए प्रत्येक मनुष्य इससे एकमत है कि संगीत आनंददायक वस्तुओं में श्रेष्ठ है, चाहे उसमें गीत हो या न हों । इसी कारण से इसे सामाजिक उत्सओं में भी प्रयुक्त किया जाता है क्योंकि यह मनुष्य के हृदय को प्रसन्नता प्रदान करता हैं । मनुष्य कम ही लक्ष्य की प्राप्ति कर पाता है तथा बीच–बीच में मनोरंजन से ही संतुष्ट रहता है, किसी शुभ के लिए नहीं वरन् सिर्फ आनंद के लिए, ऐसे लोगों को संगीत से नई स्फूर्ति प्रदान की जा सकती है । कभी–कभी मनुष्य मनोरंजन कोही अंतिम लक्ष मान लेते है । क्योंकि अंतिम लक्ष में भी संभवता आनंद का तत्व होता है । यद्यपि यह आनंद कोही उच्च स्तर का कोर्ठ साधारण या निम्न प्रकार का आनंद नहीं होता पर मनुष्य इस निम्न आनंद को ही उच्च आनंद समझने लगता है । मनुष्य उच्च आनंद की आकांक्षा करता है पर उसे निम्न आनंद ही मिलता है क्योंकि सारे आनंद देखने में समान ही दिखते हैं । लक्ष्य–प्राप्ति वरणीय नहीं हैं और नही आनंद का अस्तित्व किसी भविष्य की अच्छाई के लिए होता है वरन् आनंद भूतकाल के लिए होता है, अर्थात पुरानी थकान एवं कश्टों को हल्का करता है । यही कारण है कि मनुष्य सर्वमान्य आनंद में सुख का अनुभव करते हैं । संगीत न केवल पुरानी थकान को हल्का करता है वरन् मनोरंजन भी प्रदान करता है ।

अरस्तू के अनुसार संगीत का चरित्र पर प्रभाव :

अगर संगीत से चरित्र प्रभावित होते हैं तो इसका अर्थ है कि संगीत चरित्र पर भी प्रभाव डालने में समर्थ हैं । अरस्तू के अनुसार चरित्र पर संगीत का प्रभाव पडता है यह इस बात से प्रमाणित होता है कि औलिम्पस तथा और भी प्रमाणित बहुतों के गीत इस प्रकार का प्रभाव डालने की पूर्ण क्षमता रखते हैं । ये गीत मनुष्य में उत्साह उत्पन्न करते हैं । तथा उत्साह आत्मा के नैतिक भाग का संवेग है । इसके अलावा जब मनुश्य अनुकृति सुनता है, भले ही वह स्वर–माधुर्य एवं लय से रहित हों, उनकी भावनाएं सहानुभूतिपूर्ण हो जाती हैं । संगीत आनंद है तथा आंनदित होने अथवा प्रेम या घृणा उचित प्रकार से करने में सद्गुण की अभिव्यक्ति है । ऐसी कोई वस्तु नहीं हैं, जिसे हम प्राप्त करना चाहते हैं । तथा जिसे हम शक्ति देना चाहते हैं । जिससे हम सही निर्णय ले सके तथा अच्छी व्यवस्था एवं उदात्त कार्य – व्यापारों में आनंद ले सके । लय एवं स्वरमाधुर्य, क्रोध एवं सौम्यता की, शौर्य एवं संयम की, तथा सदगुणो एवं दुर्गुणों की अनुकृति हमें प्रदान करता है जो वास्तविक मनोभावों से किसी भी रुप में कम नहीं है क्योंकि इस प्रकार के संगीत को सुनकर हमारी आत्मा में परिवर्तन होना संभव है । केवल प्रस्तुतिकरण से ही आनंद या कष्ट प्राप्त करने की भावना सत्यता से भी वैसे ही भाव उत्पन्न करने से दूर नहीं है ।

अरस्तू के अनुसार संगीत की शिक्षा :

अरस्तू कहते है कि हमें इस प्रश्न का निर्धारण करणा है कि बच्चों को गायन या वादन सिखाना चाहिए या नहीं । यह सत्य है कि किसी भी कला के अभ्यास से चरित्र में परिवर्तन होता हैं । अगर असंभव नही तो यह कठिन अवश्य है कि जो स्वयं किसी वादन में कुशल नहीं है वह दूसरों के वादन का मूल्यांकन नहीं कर सकता । इसके अलावा बच्चों को कुछ करने के लिए कार्य होना चाहिए जो उन्हें व्यस्त रखे, अरस्तू का कहना है किइस विषय में 'आइकाइरस' का खिलौना एक महत्वपूर्ण आविष्कार था, जिसे लोग बच्चों के मनोरंजन के लिए दे दिया करते थे ताकि बच्चे घर की अन्य वस्तुओं को न तोडे, क्योंकि बच्चे स्वभाव से ही शांत नही होते । यह खिलौना बहुत छोटे बच्चों के लिए उपयुक्त है परंतु बडे बच्चों के लिए संगीत की शिक्षा ही अधिक लाभप्रद होगी । अरस्तू के अनुसार हमें बच्चों को संगीत की शिक्षा इस प्रकार देनी चाहिए कि वे उसकी आलोचना करने के साथ–साथ स्वयं भी उसका प्रदर्शन पूरी तरह करने में समर्थ हो सके ।

अरस्तू के अनुसार संगीत सीखते समय सावधानियॉ :

विभिन्न आयुओं में क्या उचित है तथा क्या अनुचित आसान है, न ही इस आपत्ति का सामना करने में कोई कठिनाई है कि संगीत की शिक्षा अभद्र है । हमारा उत्तर यह है कि पहले तो जिन्हें लोगों के प्रदर्शन पर सही निर्णय लेने हैं उन्हे स्वयं उसका उचित ज्ञान होना चाहिए तथा उन्हें उसका अभ्यास शीघ्र शुरु कर देना चाहिए । यद्यपि जब वे बडे हो जाते हैं तब उन्हें प्रदर्शन करने की भी अनुमति दे देनी चाहिए । उन्हें इस तरह का ज्ञान देना चाहिए कि वे अच्छे प्रदर्शन की प्रशंसा करें तथा उसमें आनंद ले । यह तभी संभव होगा जब उन्हें किशोरावस्था में इस तरह का ज्ञान प्रदान किया जाएगा । जो अभद्र प्रभाव संगीत उत्पन्न कर सकता है । हम उसकी भी मात्रा निर्धारित कर सकते हैं तथा उसके लिए हम यह निर्धारित कर सकते है कि मनुष्यों को किन लयों तथा उसके लिए हम यह निर्धारित कर सकते हैं कि मनुष्यों को किन लयों तथा स्वरमाधुर्यो का उपयोग करने की आज्ञा दी जाए तथा किन बातों के माध्यम से उन्हें शिक्षा दी जाए क्योंकि वाद्ययंत्रो से भी अंतर पड जाता है । यह भी संभव है कि कुछ प्रकार के सीखने का सिखाने के ढंग भी बुरा प्रभाव डालते है । यह भी ध्यान रखना चाहिए कि संगीत की शिक्षा आने वाले वर्षो के कार्यो में बाधा न डालें तथा शरीर को सार्वजनिक तथा सैनिक कर्त्वव्य के अयोग्य न कर दे ।

अरस्तू के अनुसार संगीत के अध्ययन के लाभ :

अरस्तू कुछ दार्शनिकोंद्वारा प्रस्तावित लयों के विभिन्न विभगों को स्वीकार करता है जैसे–नैतिक लयें–कार्य–व्यापार की लयें, अनुरागिक या उत्तेजक लयें । हर प्रकार की लयों का अलग–अलग प्रकार का सामंजस्य होता है । अरस्तू के अनुसार संगीत का अध्ययन किसी एक लाभ के लिए नहीं वरन् अनेक लाभों के लिए किया जाना चाहिए, अर्थात बौद्धिक आनंद के लिए तथा परिश्रम के पश्चात् विश्राम तथा मनोरंजन के लिए । इससे यह स्पष्ट है कि हमारे द्वारा सभी सामंजस्यों का प्रयोग नहीं होना चाहिए । शिक्षा में नैतिक लयों को प्रधानता दी जानी चाहिए पर हम दुसरोंद्वारा प्रस्तुत की गई कार्य–व्यापार तथा अनुराग की लयों को सुन सकते है । करुणा या पीडा की भावना और उत्साह की भावना कुछ मनुष्यों में अत्याधिक मात्रा में विद्यमान रहती है तथा थोंडा बहुत प्रभाव तो सभी पर रहता है । कुछ मनुष्य धर्मिक उन्माद के शिकार हो जाते हैं

क्योंकि वे रहस्यवादी लयों के प्रयोग से उन उन्मादों से मुक्त हो जाते हैं क्योंकि इससे उनकी आत्मा स्वस्थ तथा शुद्ध हो जाती है । करुणा या पीडा के संवेगो से पीडीत व्यक्ति भी इनकी लयों के माध्यम से इन संवेगो के अतिक्रमण से मुक्त हो जाता है । शुद्धिकरण की लयें मनुष्य को निर्दोष आनंद प्रदान करती हैं । इस प्रकार के समंजस्यों तथा लयों में प्रतियोगिता होनी चाहिए तथा उस में व्यावसायिक संगीतकारों को प्रतियोगिता में संमिलित होने के लिए आमंत्रित करना चाहिए पर चुंकि दर्शक दो प्रकार के होते है – एक संस्कारवान तथा शिक्षित तथा दूसरे अभद्र जिनमें मजदूर आदि निम्न वर्ग के लोग संमिलित होते है इसलिए दूसरे वर्ग की संतुष्टि के लिए भी प्रतियोगिताए तथा प्रदर्शनियॉ होनी चाहिए । मनुष्य उसी में आनंद लेगा जो उसकी प्रवृत्ती के अनुकूल होगा, इसलिए व्यवसायिक संगीतकारों को निम्न प्रकार के श्रोताओं के समक्ष निम्न प्रकार का संगीत प्रस्तुत करने की आज्ञा प्रदान कर देनी चाहिए । पर शिक्षा के उद्देश्य के लिए केवल उन्ही लयों का उपयोग करना चाहिए जो नैतिक हों तथा जिनकी हमारे दार्शनिकों ने स्वीकृती प्रदान कर दी हो ।

संदर्भ ग्रंथ :

1) पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र का इतिहास – सुनृत कुमार वाजपेयी
2) Beardsley, Monroe C: Aesthetics from classical Greek to the Present.
3) Taylor, A, E. Plato : The man and his works.